

पंजाब में गुणवत्तापूर्ण बीज आलू के उत्पादन में उपयुक्त बुआई के समय का महत्व

प्रिंस कुमार, मो० अब्बाश शाह, राज कुमार, अखिलेश कुमार सिंह, रत्ना प्रीति कौर एवं अनिल शर्मा

भाकृअनुप- के०आ०अनु०के०, जालंधर

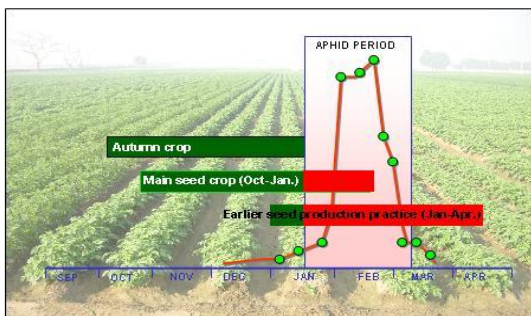
आलू दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण गैर-अनाज, उच्च उपज वाली बागवानी खाद्य फसलों में से एक है, जिसे बीज कन्दों के माध्यम से उगाया जाता है। आलू भारत की एक प्रमुख सब्जी फसल है जिसे बीज आलू उत्पादन, दैनिक उपभोग और प्रसंस्करण के उद्देश्य से उगाया जाता है। भारत में आलू की सर्वाधिक फसल का उत्पादन मैदानी इलाकों में किया जाता है। आलू अपेक्षाकृत ठंडे मौसम में उगाई जाने वाली फसल है जिसकी बुआई के समय वातावरण का अधिकतम तापमान ३२° सेल्सियस से ज्यादा नहीं होना चाहिए, साथ ही आलू कंद बनने के लिए रात्रि में तापमान २०° सेल्सियस से कम होना चाहिए। आलू कंदों के विकास हेतु १० से ३०° सेल्सियस के बीच का तापमान सबसे उपयुक्त होता है। वर्तमान में हमारे देश का आलू उत्पादन ५० मिलियन टन से अधिक हो गया है, जिसे बरकरार एवं बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण बीज आलू का अहम योगदान है। हमारे देश की एक अपनी बीज आलू उगाने

की तकनीक है जिसे “सीड प्लॉट तकनीक” के नाम से जाना जाता है।

सीड प्लॉट तकनीक का सिद्धांत

भा० कृ० अनु० प० - केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा “सीड प्लॉट तकनीक” विकसित की गई थी। इस तकनीक का मुख्य सिद्धांत बीज आलू की फसल उत्पादन को कम तेला संख्या की अवधि अक्टूबर (द्वितीय सप्ताह) से जनवरी (प्रथम सप्ताह) तक एकिकृत रोग प्रबंधन के साथ - साथ अबॉछनीय पौधों को निकालना एवं बेलो की कटाई दिसम्बर (अंतिम सप्ताह) से लेकर जनवरी (द्वितीय सप्ताह), तेले की महत्वपूर्ण संख्या स्तर पर आधारित है। इसी विधि द्वारा ही भारत के उपोष्ण कटिबंधीय मैदानों में आलू बीज उत्पादन संभव हो पाया है। इस प्रकार, कुल बीज आलू का ९४ प्रतिशत उपोष्ण कटिबंधीय मैदानी इलाकों में और शेष ६ प्रतिशत पहाड़ी क्षेत्रों में पैदा होता है।

SEED PLOT TECHNIQUE
APHID POPULATION BUILDUP IN SUB-TROPICS



चित्र १: तेले की संख्या के महत्वपूर्ण स्तर पर आधारित “सीड प्लॉट तकनीक”

बीज आलू की फसल पर फसलचक्र का परिदृश्य

भारत के उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाको में बीज आलू की फसल, धान की फसल के बाद बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। वर्तमान भू - जल स्तर की चिंता को देखते हुए, सरकार ने किसानों को धान की रोपाई मानसून-आधारित करने को कहा है, जिसके परिणाम स्वरूप धान की रोपाई २० जून के बाद ही संभव हो

पाती है। रोपाई में इतनी देरी से इसकी कटाई के समय में भी देरी होती है। इस प्रकार, धान की कटाई से लेकर बीज आलू की फसल की समय पर बुआई तक की अवधि कम हो जाती है। गुणवत्ता वाले बीज आलू का उत्पादन तभी संभव है जब बीज आलू रोपण और बेलों की कटाई की तिथियों को वाइरस-संचारित कीट वेक्टर (virus transmitted vector) की गतिविधियों के अनुसार किया जाए।

भा० कृ० अनु० प० - केन्द्रीय आलू अनुसंधान केंद्र, जालंधर पर बीज आलू के बुवाई के समय को अलग अलग तिथियों; मुख्यतः १५, २५ अक्टूबर ५, १५ नवंबर पर अध्ययन किया गया है। जिसका विवरण नीचे तालिका १ में दर्शाया गया है।

तालिका १: विभिन्न तिथियों पर बोई गई बीज फसलों में वायरस-वेक्टर की घटना और उसके परिणामस्वरूप कंदों की उपज

क्र.सं.	रोपण की तिथि	७५ प्रतिशत फसल उगने की तिथि	बेलों को काटने की तिथि	कंद निकालने की तिथि	तेले की गतिविधि	सफ़ेद मक्खी की गतिविधि	छोटे आकार के कंद		बीज के आकार के कंद		बड़े आकार के कंद	
							उ*	स**	उ	स	उ	स
१.	१५ अक्टूबर	२९ अक्टूबर	०५ जनवरी	२० फ़रवरी	उच्च	उच्च	1.0	1.0	1.0	1.0	1.0	1.0
२.	२५ अक्टूबर	११ नवम्बर	१५ जनवरी	२० फ़रवरी	कम	कम	1.1	1.5	1.0	1.0	0.8	0.7
३.	०५ नवम्बर	२४ नवम्बर	२५ जनवरी	२० फ़रवरी	उच्च	कम	1.6	2.0	1.0	0.9	0.3	0.4



४.	१५ नवम्बर	१० दिसम्बर	०५ फरवरी	२० फरवरी	उच्च	कम	2.0	2.7	0.6	0.8	0.1	0.1
----	--------------	---------------	-------------	-------------	------	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----

रोपण की पहली तारीख (यानी, 15 अक्टूबर)
की तुलना में आनुपातिक वृद्धि या कमी
*उ = कंद उपज, **स = कंद संख्या
रोपण में देरी से आलू बीज फसल की उपज
पर प्रभाव

1. 25 अक्टूबर तक की रोपाई का बीज आकार वाले आलू के उत्पादन दर पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया, यद्यपि कुल उत्पादन में गिरावट हो जाती है।
2. रोपाई में देरी होने से, बड़े आकार वाले आलू के उत्पादन पर लगातार गिरावट दर्ज की गई है। इसके विपरीत छोटे आकार वाले आलू का उत्पादन बढ़ जाता है।

निष्कर्ष

1. किसान भाइयों को धान की कम अवधि वाली किस्मों का चयन करना चाहिए, ताकि बीज आलू की फसल की बुआई उचित समय पर हो सके।
2. गुणवत्तापूर्ण आलू बीज का उत्पादन के लिए किसान भाई 25 अक्टूबर तक बुआई करे एवं बेलो की कटाई प्रथम सप्ताह जनवरी में अवश्य करें।
3. बीज आलू उत्पादक किसान फसल में तेले की निगरानी अवश्य रखें।